ओम् शान्ति 27-07-12 मधुबन

आमन्त्रित मुख्य भाईयों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

– दादी गुल्ज़ार

आज जब अमृतवेले बाबा के पास गई तो क्या देखा कि बाबा सभी बच्चों के बीच में बैठकर दृष्टि दे रहे थे। जैसे बाबा दृष्टि देते गये वैसे सभी के चेहरे बदलते गये। सारी सभा जैसे फरिश्तों के रूप में चमक रही थी। तो बाबा बोले, आज जैसे सब बच्चे वतन में इकट्ठे हुए हैं तो बाबा भी इन्हों को एक सीन दिखाता है। बाबा आगे चले और हम सभी भी पीछे-पीछे चले। वहाँ एक बहुत बड़ा सर्कल था, वह सर्कल कमल पुष्प समान बना हुआ था। बाबा ने कहा यहाँ हर एक इस कमल पुष्प में बैठ जाओ, सभी कमल पुष्प समान चबूतरे में बैठ गये। तो बाबा ने कहा आज बाबा सभी बच्चों को पिकनिक कराते हैं। सब बैठ गये, सब बहुत अच्छे लग रहे थे। जैसे हम बैठे तो सर्कल चालू हो गया, बाबा बोले हर एक बच्चा अभी यही संकल्प करे कि एक सेकण्ड में कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर हमारे है या नहीं? एक सेकण्ड में अशरीरी बन जाओ, सभी ने पुरुषार्थ किया तो कोई सेकण्ड में बन सके, कोई नहीं। तो बाबा बोले, अब आवश्यकता किस बात की है? ऐसे अचानक बातें आयेंगी जो आपको एक सेकण्ड में अशरीरी फरिश्ता वा ब्राह्मण सो देवता एक सेकण्ड में जो स्थिति चाहो वह बन जाओ, ऐसा पुरुषार्थ करना है। फिर बाबा ने चक्र लगाया तो सब एंजाय कर रहे थे। फिर सभी चबूतरे से उतरे तो बाबा एक पहाड़ी पर ले चले। जहाँ यह सेकण्ड में जो चाहो वह बन सको की ड्रिल कराई। सभी यह ड्रिल करते बहुत खुश हो रहे थे।

फिर तो बाबा के साथ हम सब नीचे आ गये और डबल वी (V) के रूप में बाबा के सामने बैठ गये। बाबा बहुत मीठी दृष्टि देते हुए मुस्कुराते बोले, बच्चे बाबा अपने निमित्त सभी साथियों को देख बहुत खुश हो रहे हैं क्योंकि यही तो बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त हैं। साथी है ना! तो बाप को खुशी होती है। वाह बच्चे वाह! उसके बाद बाबा बोले, इन बच्चों को देख रहा हूँ तो इन सबकी दिल में यही लगन है कि अब कुछ करके दिखाना है, लेकिन सेवा पर जाते दृढ़ संकल्प साधारण संकल्प हो जाता है क्योंकि वहाँ के वातावरण के प्रभाव में आ जाते हैं। लेकिन बाबा यही चाहते हैं कि यहाँ का वायब्रेशन वहाँ सेवास्थान पर डालें जो आने वालों पर भी वह प्रभाव पड़े। जितना यहाँ बल भरते हैं, उतना ही वहाँ वायुमण्डल बनायें और साथियों को भी अनुभव करायें। बाप जानते हैं कि बातें तो सामना करेंगी लेकिन बाप साथ है तो बात क्या बड़ी बात है! तो बाबा से किया हुआ वायदा पूरा करके दिखाना है, इस निश्चय को और ही मजबूत करते जावें। ऐसे बाबा का कहना सुनकर सब भाईयों की सूरत ऐसे स्नेह में समा गई थी, जो ऐसे लग रहा था जैसे दिल ही दिल में सब कह रहे हैं - बाबा, मीठा बाबा हम करके ही दिखायेंगे और बाबा भी हर एक को बहुत-बहुत लवलीन रूप से सकाश दे रहे थे।

इसके बाद बाबा बोले, मेरे सर्विस साथियों को सौगात क्या देंगे? बाबा का कहना और सौगातें हाज़िर हो गई। क्या थी? बहुत ही सुन्दर बैज बाबा के सामने आ गये। बैज भी न्यारे और प्यारे थे। ऊपर पिन में मेरा बाबा लिखा हुआ था और बैज के अन्दर हार्ट का चित्र था, उसके बीच में शिवबाबा का चित्र सच्चे हीरे के रूप में बड़ा सुन्दर चमक रहा था, जो बड़ा न्यारा और प्यारा लग रहा था। बाबा ने हर एक को बाहों में लेकर सबको सौगात दी और कहा यह आपकी दिल का चित्र है, एक दिलाराम बाप ही दिल का सहारा सर्व सम्बन्ध में है, दूसरा न कोई। ऐसे कहते सौगात देते सबको साकार वतन में भेज दिया। उसके बाद दादी जानकी को, रतनमोहिनी दादी को इमर्ज किया और बहुत-बहुत प्यार किया, अपने में समा लिया। साथ में तीनों भाईयों को भी इमर्ज किया और अपने बाहों में समाये बहुत-बहुत प्यार किया और बोले, बाबा को निश्चय ही है कि कोई कमाल कर दिखायेंगे और सबको विशेष बैज देकर प्यार किया, ऐसे ही यह दृश्य भी समाप्त हो गया। हमने भी अपने को साकार वतन में देखा। ओम् शान्ति।